# SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION – 21-23

COURSE NAME – B.Ed.

SUBJECT - C-5

TOPIC NAME – School Meaning, Defini. etc.

DATE - 31-01-2022

Scanned with CamScanner

★ विद्यालय

* अर्थ * परिभाषा * महत्व * आवश्यकता * कार्य।

Introduction:- शिक्षा के साधनों में विद्यालय का स्थान सबसे महत्वपूर्ण एवं सर्वश्रेष्ठ है। जिसका स्वरूप औपचारिक एवं सक्रिय है। विद्यालय समाज एवं सामाजिक अंगों द्वारा स्थापित वह संस्थान है जहाँ बालक का सर्वांगिण विकास कर उसे इस योग्य बना दिया जाता है की वह अच्छे समाज का निर्माण कर सके तथा समाज की आवश्यकताओं की पुर्ति में अपना योगदान दे एवं विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं का समाधान करता हुए आदर्श नागरिक बने।

* विद्यालय का अर्थ *

विद्यालय शब्द का संधि विच्छेद - विद्या + आलय अर्थात् वह जगह/स्थान जहाँ शिक्षा रहती हो या प्राप्त होती है।

अंग्रेजी में इसे SCHOOL कहते हैं। School शब्द की उत्पत्ति Greek word Schola से हुई, जिसका मतलब अवकाश/छुट्टी अर्थात अवकाश का समय व्यतित का स्थान।

A.F Leach ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखा "वाद-विवाद का स्थान जहाँ ऐथेन्स के युवक अपने अवकाश के समय खेल-कूद, व्यायाम युद्ध का प्रशिक्षण एवं राजनितिक विचारों का आदान प्रदान करते थे, समय के साथ-साथ दर्शन एव उच्च कक्षाओं के विद्यालय के रूप में बदल गये।

*विद्यालय की परिभाषा *

विद्यालय को विभिन्न महान शिक्षाशास्त्रीयों एवं विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार परिभाषित किया है। जिनमें कुछ निम्नलिखित है

⇒ J.S Ross के अनुसार :- "विद्यालय वह संस्था है, जिसको सभ्य मनुष्यों द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित और योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिल सके।

P.T.O

Scanned with CamScanner

⇒ John Dewey के अनुसार :- " विद्यालय ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा उस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।

उपरोक्त दोनों परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा के दार्शनिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा जिस स्थान पर व्यवस्थित ढंग से शिक्षा दी जाती है. विद्यालय कहलाता है।

## *विद्यालय की आवश्यकता एवं महत्व*

विद्यालय समाज के व्यक्तियों द्वारा समाज में स्थापित किया जाता है। जहाँ दोनों एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते हैं। समाज में विद्यालय की आवश्यकता एवं महत्व को दर्शाते हुए S. Bal Krishna joshi ने लिखा " किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण - विधान सभाओं, न्यायालयों एवं कारखानों से नहीं बल्कि विद्यालयों से होता है। "

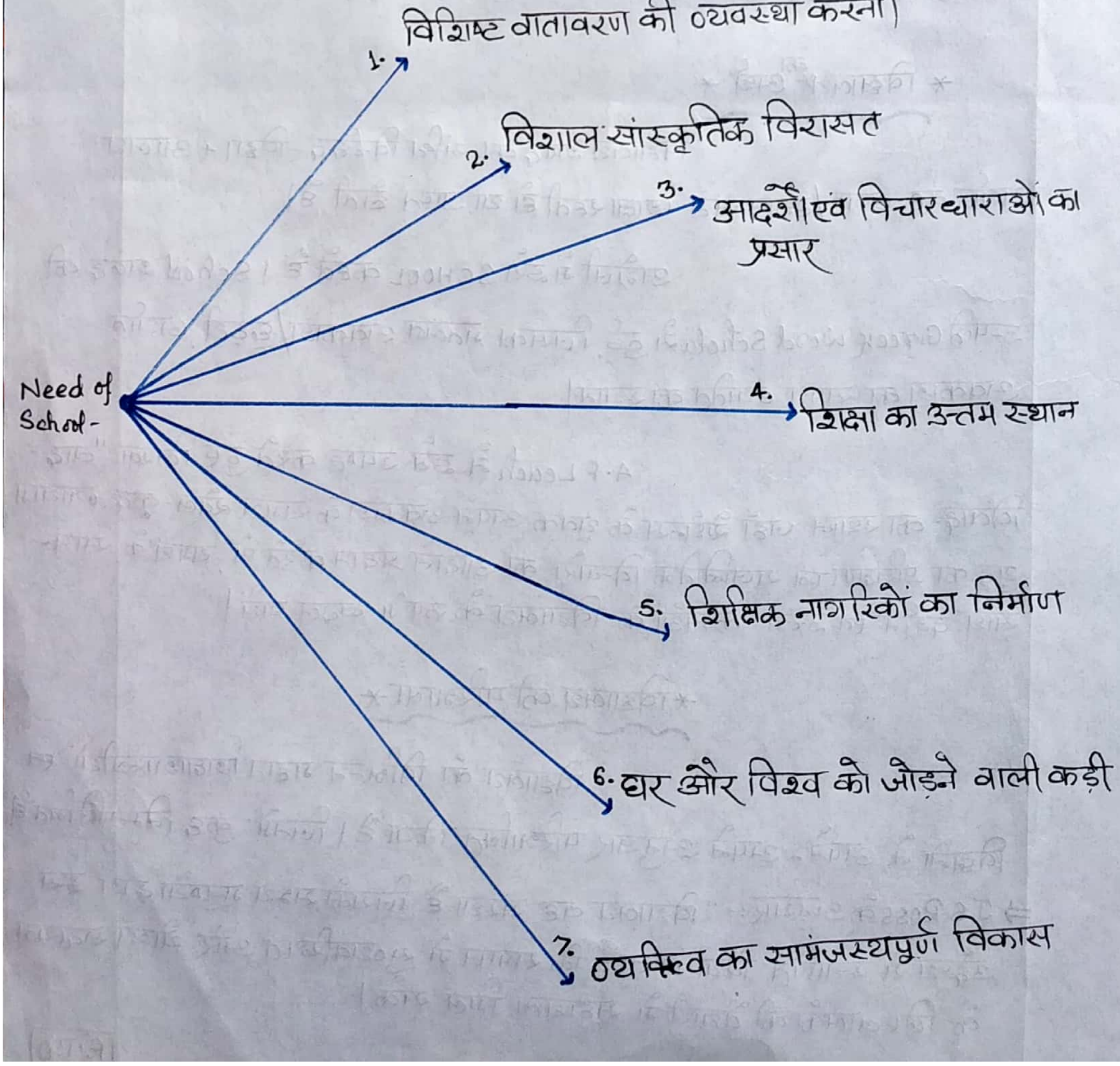


Scanned with CamScanner

1. **विशिष्ट वातावरण की व्यवस्था:-** विद्यालय में छात्रों को एक विशिष्ट वातावरण मिलता है अर्थात विद्यालय छात्रों को एक विशिष्ट वातावरण प्रदान करने की स्थाई ईकाई है। यह वातावरण शिक्षा की दृष्टि से शुद्ध, सरल, और सुरक्षित होता है. इसमें छात्रों की प्रगति पर स्वस्थ एवं शिक्षा का भरपूर ध्यान रखा जाता है।

2. **विशाल सांस्कृतिक विरासत:-** विरासत में मिली विशाल सांस्कृति इसमें शामिल कला ज्ञान, कुशलता, कार्यविधियाँ आदि का ज्ञान एवं शिक्षा एक व्यक्ति या अभिभावक द्वारा देना कठिन है, अत: यह कार्य विद्यालय को करने को दिया जाता है।

3. **आदर्शों एवं विचारधाराओं का प्रसार:-** राष्ट्र के आदर्शों और विचारधाराओं के विस्तार एवं समुदाय में फैलाने के लिए विद्यालय को अतिमहत्वपूर्ण साधन माना गया है। इस लिए सभी प्रकार के राज्य व्यवस्था, लोकतन्त्रीय या साम्यवादी इत्यादी में विद्यालय का स्थान उच्च एव गौरवपूर्ण है।

4. **शिक्षा का उत्तम स्थान:-** विद्यालय घर की अपेक्षा शिक्षा का उत्तम स्थान है कि विद्यालयों में विभिन्न आदतों, रुचियों, क्षमताओं एवं दृष्टिकोण के बालक आते है, जहाँ लगातार सम्पर्क में आने के कारण उन्हें सीखते हैं, तथा पूरे समय शिक्षक की निगरानी में गलत आदतों से बचते है।

5. **शिक्षित नागरिकों का निर्माण:-** शिक्षित नागरिक के निर्माण में विद्यालय सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है, विद्यालय के अनुशासित वातावरण में बालक शिक्षा के साथ-साथ धर्म, सहयोग, उत्तरदायित्व आदि जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को अपनाकर एक अच्छे नागरिक बनकर देश के विकास में अपना सहयोग देते है

6. **घर और विश्व को जोड़ने वाली कड़ी:-** बालक की शिक्षा में घर की भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता, जहाँ वह (बालक) अनुशासन, सेवा, सहानुभूति तथा संस्कार पाता है, लेकिन घर की चहार दिवारी (चारों तरफ की दिवारें) में वह संकुचित रह जाते है, लेकिन विद्यालय में विभिन्न, समुदाय, वर्ग, जाति, विभिन्न स्थान के अन्य बालकों के संपर्क एवं विश्व में घट रही घटनाएं तथा दृष्टिकोण से सम्पर्क स्थापित कर विस्तृत रूप प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

**7. व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास:-** घर, समाज, धर्म, समुदाय शिक्षा के विभिन्न अनौपचारिक साधन है, लेकिन निश्चितता (fixmata) और नियोजित (Planning) के अभाव में कभी-कभी बालक के व्यक्तित्व पर इसका बुरा प्रभाव भी पड़ता है, लेकिन विद्यालय के कार्यक्रम का बालक पर अतिउत्तम प्रभाव पड़ता है और उसके व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास होता है।

**8. बहुमुखी सांस्कृतिक चेतना का विकास:-** विद्यालय में विभिन्न परिवारों, समुदायों एवं संस्कृतियों से छात्र आते हैं, जहाँ बालक में लगातार सम्पर्क होने के कारण सांस्कृतिक गुणों का आदान-प्रदान होता है। यही कारण है कि विद्यालय बहुमुखी सांस्कृति-चेतना का विकास का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है।

अतः प्रत्येक स्तर पर विद्यालय को साधन माना जाता है जो अतिमहत्वपूर्ण एवं आवश्यक है, विद्यालय बालकों को सही रास्ता दिखाता है, जो उसके नैतिक मुल्यों का विकास करता है एवं प्रजातांत्रिक विकास भी करता है, व आदर्श व आदर की भावना का निर्माण करता जिससे बालक व समाज का सर्वांगिण विकास होता है।

## * विद्यालय के कार्य [FUNCTION OF SCHOOL]:-

विद्यालय के कार्य को दो भागों में बाँटकर समझने में आसानी होगी।

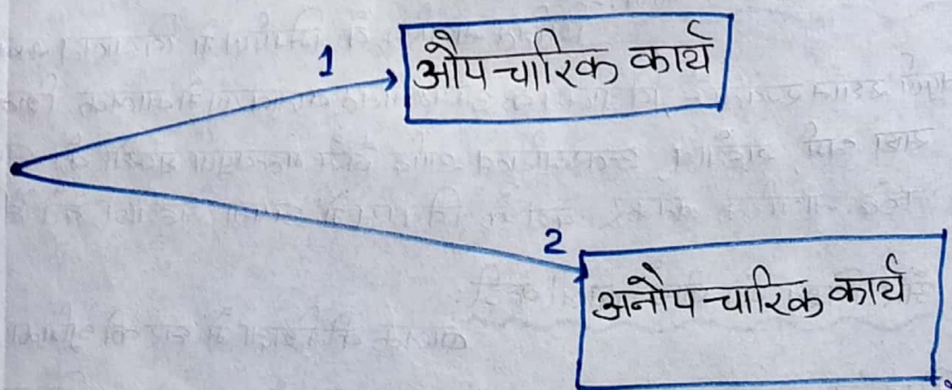


उपरोक्त दोनों कार्यों की विवेचना से पूर्व ब्रुबेकर महोदय के विचार को भी जान लेते हैं जो इस प्रकार है।

-।- विद्यालय पथ प्रदर्शक है यानि समाज को प्रगति की ओर ले जाता है। विद्यालय का कार्य है कि स्वयं में परिवर्तन (बदलाव) कर समाज को विकास की ओर ले जाता है।

-।- विद्यालय का कार्य समाज के मुल्यों, आदर्शों एवं सच्चाई की शिक्षा देना है।



Scanned with CamScanner

-•- विद्यालय द्वारा सामाजिक विरासत की रक्षा कर हर पीढ़ी को इससे अवगत कराता है। अतः पूर्वजों के ज्ञान से नई पीढ़ी अवगत होती है।

वहीं Thomson महोदय का कथन इस प्रकार है।

-•- विद्यालय का कार्य बौद्धिक, प्रशिक्षण, तर्क-वितर्क की शक्ति स्थापित करना है। नागरिकों में चरित्र का विकास करना। सामुदायिक प्रशिक्षण देना। देश भक्ति से अवगत करना, स्वास्थ ठीक रहे इसके लिए health (स्वस्थ) और cleanliness (साफ-सफाई) को (प्रशिक्षण) Training देना आदि

विद्यालय के दो कार्यों की विवेचना निम्नलिखित है।

## [1] औपचारिक कार्य :-

विद्यालय का कार्य है कि वह बालकों में ज्ञान, सूझ-बूझ, निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करे। सामाजिक विकास में सहायता करे। सामाजिक विरासत को एवं संस्कृति को नई पीढ़ी के सामने रखकर परिचित कराये। आदर्श नागरिकता की शिक्षा प्रदान करे। विकासात्मक कार्यों द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व का पूरा-पूरा विकास करे। योग्यताओं और क्षमताओं की पहचान कर बालकों में ज्ञान को बढ़ाना। ऐसा कार्यक्रम कराना जो छात्रों में नैतिकता, आदर्श, सत्य की प्रेरणा आदि प्रदान कर सके। राष्ट्रीयता व अंतर्राष्ट्रीयता के प्रति स्वस्थ्य दृष्टिकोण के लिए विद्यालय का कार्य ज्ञानात्मक शिक्षा देना है तथा उचित वातावरण को बनाए रखना है।

## [2] अनौपचारिक कार्य :-

विभिन्न क्रियाओं के द्वारा छात्रों में भावनात्मक विकास करना जिससे क्रियात्मक कार्य करने की इच्छा को जगाया जा सके। सामाजिक प्रशिक्षण द्वारा समाज सेवा में जागरूकता विकसित करना। अनेक क्रियाओं का आयोजन करके सामाजिकरण की शिक्षा देना, सक्रिय वातावरण की खोज कर रुचि के अनुसार छात्रों में इस क्रिया के लिए प्रोत्साहित करना।

छात्रों में शारीरिक प्रशिक्षण एवं संवेगात्मक प्रशिक्षण के लिए N.C.C, N.S.S, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम स्वस्थ एवं सैनिक शिक्षा का आयोजन करना।

संगीत, वाद-विवाद, चित्रकला प्रदर्शनी, महत्वपूर्ण दिवस पर समारोह आयोजित करना।

Scanned with CamScanner

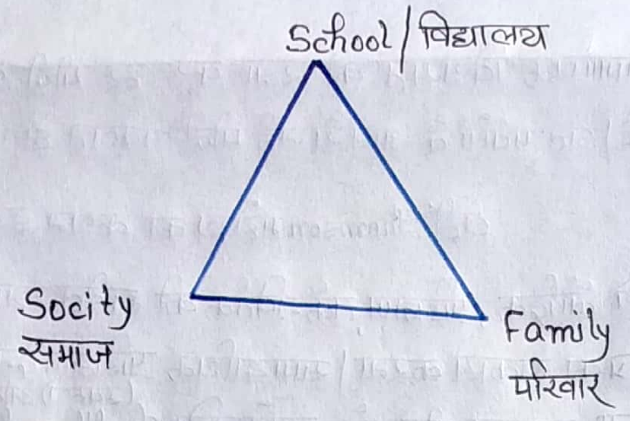


प्रजातांत्रिक काल में विद्यालय महत्वपूर्ण एवं ज्ञान का माध्यम है, लेकिन परिवार और समाज भी बालक के विकास में सहयोगी है। इसलिए सारा भार विद्यालय पर ही नहीं दिया जा सकता है। अत: यह सहयोग

बालक ↔ शिक्षक, विद्यालय ↔ बालक, विद्यालय ↔ समाज, परिवार ↔ विद्यालय, अभिभावक ↔ विद्यालय पर भी निर्भर करता है।

कम शब्दों मे कह सकते है कि

"विद्यालय और समाज में परस्पर सहयोग से ही बालक का भविष्य उज्जवल हो सकता है।

निष्कर्ष :- उपरोक्त विवेचनाओं से निष्कर्षत: कह सकते है की विद्यालय व समाज, मिलकर बालक का चौतरफा विकास करते है, जिससे बालक स्वंय को एक सभ्य नागरिक के रूप में समाज में स्थापित करता हुआ, स्वंय की आवश्यकता की पुर्ति करने योग्य हो जाता है। तथा विभिन्न सामाजिक, समस्याओं का समाधान कर समाज के विकास मे अपना योगदान ~~मिलता~~ । देता है

विद्यालय समाज के प्रत्येक बालक को इस प्रकार शिक्षित करता है जिससे वह समाज का आर्थिक एवं अन्य प्रकार से विकास करे।

The End